Introduction

विवेच्य विषय की प्रस्तुति

HANSA MEHTA LIBRARY The M.S. University of Baroda

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित किया गया है।

'प्रथम अध्याय' में दोहा छंद की हिन्दी साहित्य में प्रयुक्त भूमिका पर प्रकाश डाला गया है और 'दोहा' की परिभाषा को लेकर विभिन्न विद्वानों के मतों को प्रस्तुत किया गया है तथा दोहा छंद के प्रारंभिक प्रयोग पर विषद चर्चा की गई है। दोहा के विभिन्न रूपों जैसे दोहा, दोहरा, दूहा आदि की परम्परा तथा पालि, प्राकृत अपभ्रंस में हुए प्रारंभिक प्रयोग का ववेचन किया गया है तथा दोहा की वरिष्ठ परंपरा को विश्लेषित किया गया है।

दोहा छंद का जन्म एवं उसका विकास प्रस्तुत अध्याय में व्याख्यायित किया गया है। दोहा के प्रकार और रूप परं सोदाहरण चर्चा की गई है। तथा दोहा छंद के व्याकरणिक विधान, मात्रिक संरचना, पदविन्यास और गेयता जैसे पहलुओं पर तार्किक विवेचन हुआ है।

'द्वितीय अध्याय' में दोहा छंद के भाषिक विकास को बताया गया है कि दोहा लोकाग्रही छंद है। अतः लोक साहित्य में इसका प्रचलन, लोक शब्द की परिभाषा को लेकर विद्वानों के मत, दोहा जनसामान्य में लोकप्रिय होने के कारण ग्राम्यांचली पहेलियों, कहावतों आदि में इसका प्रचलन और अनेकानेक भाषाओं के साथ जुड़े होने से विभिन्न भाषाओं (संस्कृत पालि, प्राकृति, अपभ्रंस, देशज, विदेशी) के प्रभाव को दोहा छंद में विश्लेषित किया गया है।

विभिन्न भाषाओं की शब्दावली का प्रयोग आधुनिक दोहा छंद में हुआ है। जिस पर इस अध्याय में चर्चा की गई है और आधुनिक हिन्दी खड़ी बोली के शब्द-भण्डार में इन विविध भाषाई शब्दों का शामिल होना हिन्दी खड़ी बोली के विकास का एक सोपान है, जिसे आधुनिक दोहा साहित्य से विश्लेषित किया गया है।

'तृतीय अध्याय' में दोहा छंद के परम्परित वर्ण्य विषय पर विचार किया गया है जिसमें धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, साहित्यिक एवं अन्य विषयों को केन्द्र में रखकर परंपरित विषय में आधुनिक दोहा छंदों का प्रयोग दर्शाया गया है। आधुनिक साहित्य मानव जीवन के साथ जुड़ा हुआ है और प्रत्येक विषय में मानव ही केन्द्र में है।

दोहा छंद में किसी भी भाव की अभिव्यक्ति हो चाहे वह कथाव्यथा हो या प्रेम की सुगंध अध्यात्म हो या दर्शन, जीवनानुभव हो या आत्माभिव्यक्ति के अन्य रूप, सभी परंपरित भावों को दोहाकारों ने आधुनिक परिवेश में प्रस्तुत किया है। जिसका अन्यान्य उदाहरणों के द्वारा प्रस्तुत अध्याय में विस्तृत विवेचन हुआ है।

'चतुर्थ अध्याय' में आधुनिक दोहा छंद में प्रयुक्त अभिनव प्रयोगों की छटा को विवेचित किया गया है जिसमें अभिनव वर्ण्य संयोजना, सामयिक दोहों का अभिनव राजनीतिक सरोकार, नैतिक सरोकार, श्रृंगारिक विषय में अभिनव प्रयोग, सांस्कृतिक सरोकार, साहित्यिक एवं अन्य विषयों को लेकर आधुनिक दोहा छंद के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण, विवेचन किया गया है।

'पंचम अध्याय' में प्रमुख आधुनिक दोहाकारों के व्यक्तित्व एवं प्रदान पर प्रकाश डाला गया है जिसमें देशभर में उपस्थित दोहा छंद के सशक्त प्रतिनिधि हस्ताक्षरों की साहित्यिक प्रतिभा, उनका जन्म, स्थान, परिवार, शिक्षा एवं उनके लेख, रचनाएं और ग्रंथों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है। साथ ही हिन्दी साहित्य को विकास की नयी ऊंचाई पर लाने में उनके अवदान-प्रदान को भी बताया गया है। दोहा छंद को लेकर उनके मंतव्य एवं विचार भी प्रस्तुत हैं।

'षष्ठ अध्याय' में दोहा छंद के सौन्दर्यवादी अभिगम पर विस्तार से विवेचना की गई है। काव्य का सौन्दर्य ही उसमें रस भरता है और रुचिकर बनाता है। काव्य में सौन्दर्य का क्या महत्व है एवं सौन्दर्य की परिभाषा को विवेचित किया है। साथ ही सौन्दर्य के विभिन्न पक्षों पर विवेचन किया गया है। जिसमें कविता का सौन्दर्य, कथ्य का सौन्दर्य, प्रस्तुति का सौन्दर्य, विषय का सौन्दर्य, ध्वनि का सौन्दर्य, वक्रोक्ति का सौन्दर्य, संवेदनाओं का सौन्दर्य, मनोविकारों का सौन्दर्य, प्रकृति का सौन्दर्य, अभिप्राय का सौन्दर्य, अध्यात्म का सौन्दर्य, परोक्ष कथ्यों का सौन्दर्य, भाषा का सौन्दर्य आदि पक्षों पर आधुनिक दोहा छंद के परिप्रेक्ष्य में विवेचन किया गया है। जो आधुनिक दोहा छंद के सौन्दर्यवादी अभिगम को प्रस्तुत करता है।

'सप्तम् अध्याय' में विवेच्य सामग्री का मूल्यांकन किया गया है, जिसमें आधुनिक दोहा छंद और उसके विविध आयामों को केन्द्र में रखकर स्वयं के निर्धारण को अभिव्यक्ति दी गई है और आधुनिक दोहा साहित्य की समीक्षा और मूल्यांकन प्रस्तुत हुआ है।

यहाँ इस शोध-प्रबंध का उपसंहार भी प्रस्तुत किया गया है तथा उसके पश्चात् परिशिष्ट में संदर्भ-ग्रंथों की सूची प्रस्तुत की गई है।